ISSN: 0972 - 2351

मत्स्यगंधा
2003

मात्स्यिकी और जीविकोपार्जन

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
कोचीन - 682018

चिंगट पालन से जीवीकोपार्जन करने में के वी के, नारक्कल द्वारा निभाई भूमिका

पी.के. मार्टिन तोम्पसन
के.वी.के., केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, केरल

केरल के करीबन 0.2 मिलियन हेक्टयर खारा पानी क्षेत्र चिंगट पालन के लिए अनुयोज्य देखा जाता है। इस में लैगूण, ज्वारनदमुखियाँ, संकरी खाडियाँ और दलदली भूमियाँ भी शामिल हैं। इस में एर्णाकुलम जिले के 16213 हेक्टयर क्षेत्र में अब खारा पानी चिंगट पालन हो भी रहा है। यहाँ के पोक्काली खेत पहले ही परंपरागत झींगा पालन केलिए मशहूर हैं।

चिंगट पालन का प्रभाव

के वी के नारक्कल द्वारा चिंगट पालन पर दिये गए प्रशिक्षण और विस्तार कार्यकलापों के प्रभाव का अध्ययन सर्वेक्षणों और उनके संदर्शनों के ज़रिए किया गया। इस पर मिले डाटाओं ने व्यक्त किया कि चिंगट किसान और प्रशिक्षणार्थी कई प्रकार के चिंगट रोज़गार जैसे परंपरागत और नई पालन रीतियाँ, चिंगट बीज व्यापार, निजी, सरकारी, विकासीय अभिकरणों के चिंगट पालन क्रिया कलापों में लगे रहते हैं।

पालन खेतों का विस्तार

सत्तर के दशकों में जब नारक्कल के वी के की स्थापना हुई थी तब एर्णाकुलम जिले में चिंगट पालन 4520 हेक्टयर क्षेत्र में हो रहा था। अब बढकर 9509.58 हेक्टयर में परंपरागत चिंगट पालन, 1087.43 हेक्टयर में सुधरी परंपरागत चिंगट पालन और 419.12 हेक्टार में अर्धतीव्र चिंगट पालन हो रहे हैं।

रोज़गार के अवसर

चिंगट पालन खेतों के काम वैविद्यपूर्ण होने के कारण दोनों पुरुषों और महिलाओं को रोज़गार के अवसर हैं। खेत की तैयारी, पालन जीवों का संग्रहण, देखभाल व अशन; पानी का विनिमयन और गुणता नियंत्रण; फसलकाट, परिवहन और विपणन; छिल्कायन और शीतीकरण आदि कामों में सैकडों लोगों को काम मिल जाते हैं।

खेत की तैयारी में रोज़गार

यह मौसमिक काम है। खेतों को कृषि योग्य पानी संभरण गहराई तक तैयार करना, बाँधों को सुदृढ़ करना, जल के आगम-निर्गम केलिए नालियों व स्लूइस गेटों का निर्माण आदि के लिए करीब एक हेक्टयर में 5-6 मज़दूरों को 10 दिवसों का काम करना पडता है अतः पूरे जिले में 880000 दिवसों का काम लगना पडता है। जिस केलिए 17.6 करोड रु मज़दूरी के रूप में कृषकों द्वारा खर्च किया जाता है।

हैचरी में रोज़गार

परंपरागत रीति से सुधरी और अर्धतीव्र कृषि रीतियों की ओर बदल जाने पर झींगा बीजों का पालन एक उभरता धंधा बन गया। पहले में झींगा बीजों की माँग बढने पर के वी के ने प्रकृति से झींगा बीज संग्रहण करने की विधा पर युवकों को प्रशिक्षण दिया करते थे। अब हैचरियों में झींगा बीज उत्पादित करने की प्रौद्योगिकी विकसित की है। एर्णाकुलम जिले में निजी सेक्टर में अब इस प्रकार के 7 हैचरियाँ कार्यरत हैं। फिर भी पुलि झींगा बीजों की माँग की पूर्ति के लिए उड़ीसा, तमिलनाडु और आन्ध्र प्रदेश की हैचरियों पर निर्भर रहते है क्यों कि नॉप्लियों को उधर से लाना प्रजनकों की पकड व प्रजनन तक पालन से आसान है। अतः 70% बीजों की माँग पूर्ति उपर्युक्त राज्यों से परिवहित करके की जाती है। झींगा उत्पादन हैचरियाँ

पत्रव्यवहार : डॉ. पी.के. मार्टिन तोम्पसन, प्रभारी वैज्ञानिक, केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कृषि विज्ञान केंद्र, नारक्कल - 682 505

यहाँ के अनुकूल प्रजनन मौसम अक्तूबर से जून तक कार्यरत होते है जिस में दिन-रात लोग काम करते हैं। आय, उत्पादन होने वाले बीजों के तादाद पर निर्भर है। वर्ष में औसत 4.5 करोड रुपयों का बीज-विपणन इन हैचरियों से होता है। अलावा इसके परिवहन उद्योग में भी कई लोगों को काम मिलते हैं।

चिंगट खेतों में रोजगार

पालन कार्य में खेत के अनुरक्षण व निगरानी, बाँधों स्लूइस गेटों का अनुरक्षण; जीवों का अशन, बढती का मॉनिटरन, पानी विनियम और फसल काट आदि शामिल है। इस में प्रति हेक्टयर खेत में 3-4 लोगों को नियमित काम मिलते हैं। अतः प्रतिवर्ष 30000 लोग इस में रोज़गार पाते हैं और उनका प्रतिमाह औसत आय 3000 रु हैं। पूरे मौसम का व्यय करीब 4.5 करोड रुपए हैं।

चिंगट पालन और आश्रित उद्योग

पीलिंग शेड्स

चांद्र पक्ष के अनुसार परंपरागत और सुधरी परंपरागत चिंगट पालन खेतों में महीने में दो बार 5 दिवसों की अवधि में झींगों के फसल-काट होते हैं। अर्धतीव्र पालन प्रणाली में फसल-काट पालन शुरू होकर 90-100 दिवसों के बाद होता है। सारी पकडों का संसाधन पीलिंग शेडों में होता है जहाँ झींगों के छिल्कायन और शीतीकरण होते हैं। एर्णाकुलम जिले में 1500 पीलिंग शेड कार्यरत है जहाँ 3-4 पुरुषों को परिवहन और पर्यवेक्षण से जुडे नियमित रोज़गार उपलब्ध हैं। एर्णाकुलम जिले में करीबन 4500 पुरुष इन पीलिंग शेडों में कार्यरत हैं जिनका प्रति दिन वेतन 150/- रु. हैं। इनकेलिए वार्षिक खर्चा 70.85 करोड रुपए हैं। पीलिंग शेडों में चिंगटों का ग्रेडीकरण होता है जिसे काउंट (count) कहते हैं। काउंट अन्तर्राष्ट्रीय मार्केट द्वारा नियत किया यूनिट है जिसका मतलब एक कि ग्राम भार में तोलनेवाले झींगों की संख्या से हैं; अतः प्रति कि ग्राम में झींगों की संख्या जितना कम हो वह सब से बढिया काउंट है।

20 कांउटवाला चिंगट की दाम 500 रु से ऊपर और 50 काउंट का 300 रु से ऊपर होगा जबकि 900 काउंट का दाम 35 रु के आस पास हैं।

झींगों के छिल्कायन में महिला मज़दूर लगे रहते हैं। छिल्कायन कम वेतन का काम है जो कि 30 कि ग्राम झींगों की छिल्का व आंत्र को निकालने केलिए 100 रु कमा सकते है। प्रत्येक यूनिट में 20-50 महिला मज़दूर काम करती हैं और उनके प्रतिदिन औसत आय 25 रु हैं। फिर भी इस क्षेत्र में 45000 महिलाएं काम कर रही हैं।

शीतीकरण संयंत्र

चिंगटाश्रित उद्योग के रूप में 100 के निकट शीतीकरण संयंत्र कार्यरत हैं। स्वयंचालित इन संयंत्रों में 3 लोगों को

चिंगटों का निम्नलिखित ग्रेडीकरण महिलाओं द्वारा किया जाता है।

पेनिअस मोनोडॉन (प्रति कि ग्राम में सं.)	*पेनिअस इंडिकस* (प्रति कि ग्राम में सं.)	*पेनिअस इन्डिकस/ परापेनिओप्सिस स्टाइलिफेरा* (प्रति कि ग्राम में सं)
20	40	230
30	50	400
40	60	600
50	70	900
60	80	1000
80	100	1200
100	120	1400
	140	
	170	

रोज़गार मिलता है। एक आइस ब्लोक की दाम 30 रुपए हैं और ऐस ब्लोक से 25 कि ग्राम चिंगट का शीतीकरण होता है। इस क्षेत्र के कार्मिकों को वर्षाना 1.75 करोड रुपए वेतन के रूप में वितरण करते है।

चिंगट खाद्य उद्योग

झींगों को खिलाने के स्टार्टर, ग्रोअर, फिनिशर ग्रेडों के आहार आज मार्केट में उपलब्ध हैं। एर्णाकुलम जिले में जापान के सहयोग से ऐसा एक फैक्टरी कार्यरत है।

समाज-आर्थिकी

केरल में चिंगट पालन प्रौद्योगिकी के प्रचार करने में नारक्कल के वी के ने अहं भूमिका निभाई है। सत्तर के दशकों में एर्णाकुलम जिले में परंपरागत झींगा पालन रीतियाँ सीमित रही थी। आज केरल के अन्य जिलाओं में अर्घतीव्र पालन प्रणालियाँ व्यापक बन गई है जिस से हज़ारों को रोजगार मिल गए हैं। जीविकार्जन के साथ-साथ लोगों के समाज-आर्थिक स्थितियों के उन्नयन केलिए यह धंधा उपयोगी साबित आ हुई है। आज कल पर्यटन उद्योग के साथ जुडाते होते हुए यह धंधा विदेशियों का आकर्षण भी कर रहा है।

मुख्य शब्द - Keywords

नॉप्लि - shrimp seed of cultivable stage (naupli)
चिंगट पालन - shrimp farming
पेनिअस मोनोडॉन - (*Penaeus monodon*)- Giant tiger prawn
पेनिअस इंडिकस - (*P. indicus*)- Indian white prawn
पारापेनिआप्सिस स्टाइलिफेरा - (*P. stylefera*)- Kiddi prawn